IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# 'गोदान' म गाँव से शहर की ओर पलायन : आ िनभरता और शोषण के बदलते मनोवै ािनक !ितमान

िमली रानी पॉल

िहंदी िवभाग

िहंदी िवभाग, कैरयर ाइंट िविवालय, कोटा, राजथान, भारत

## शोध सार

मुंशी !ेमचंद कृत 'गोदान' *(1936)* म% &ामीण-शहरी !वासन के फल*+प मानवीय मानस म% आने वाले परवत-नों का मनोिव.ेषणा0क अ2यन करता है। डॉ. रामिवलास शमा- और नामवर िसंह जैसी पारंपरक आलोचनाओं ने इस उप8ास को मु9 +प से मा:-वादी व सामािजक-आिथ-क ;ि<कोण से देखा है। इसके िवपरीत, यह शोध पलायन के कारण पा?ों के '*', आ0िनभ-रता और शोषण के बदलते मनोवैAािनक !ितमानों का िव.ेषण करता है। अ2यन म% अBाहम मैCो के 'आवDकता पदानुEम' और एरक एर:न के 'पहचान के संकट' िसGांतों के मा2म से पाH-िव.ेषण िकया गया है। यह प? दशा-ता है िक होरी का पारंपरक आ0िनभ-रता का !यास एक 'मनोवैAािनक Iम' था, जबिक शहर जाकर गोबर के भीतर JKLवादी '*' का उदय होता है। साथ ही, यह गाँव के नैितक भय तथा शहर के औोिगक अकेलेपन *(अलगाव)* से जिनत मानिसक आघातों और पीछे छूटी मिहलाओं के भावना0क संताप को रेखांिकत करता है। यह अ2यन थािपत करता है िक 'गोदान' म% विण-त िवथापन का संकट वत-मान समकालीन भारत के !वासी मजदूरों के अKQRगत संघष- को समझने म% पूरी तरह !ासंिगक है।

**मु$ श%: गोदान, !वासन, मनोिव&ेषण, पहचान का संकट, अलगाव, आ िनभरता का +म, शहरी-,ामीण िव-थापन।**

मुंशी !ेमचंद Tारा रिचत गोदान केवल औपिनवेिशक भारतीय कृ षक समाज का ऐितहािसक दQावेज नहीं है, बKV यह बदलते भौगोिलक प रवेश के बीच मानवीय चेतना तथा * के +पांतरण का एक जिटल मनोवैAािनक आ9ान भी है। पारंप रक +प से, गोदान पर आलोचना0क िवमश- अXंत समृG रहा है। डॉ. रामिवलास शमा-, नामवर िसंह और अमृत राय जैसे !िति$त िवानों ने इस उप8ास का मु9 +प से मा:-वादी, समाजशाZीय और ऐितहािसक ;ि<कोणों से मूांकन करते \ए औपिनवेिशक अथ-Jव था, सामंती उ]ीड़न, ऋण के जाल और वग- संघष- के यथाथ- को !खरता से आलोिकत िकया है। य िप ये पGितयाँ उप8ास के बा' यथाथ- को समझने के िलए महRपूण- हa, िकं तु वे &ामीण शहरी !वासन के कारण पा?ों के भीतर घटने वाले आंत रक और JKLपरक मनोवैAािनक आघातों को िव.ेिषत करने म% अ समथ- रही हa। !Qुत शोध प? इसी आलोचना0क रKL को भरने के उbेD से सािहKXक पाठ की Jा9ा म% अBाहम मैCो, ए रक ए र:न और उdर-औपिनवेिशक मनोिवAान के िसGांतों का Jावहा रक अनु!योग करता है। यह शोध कई अंतर-संबंिधत उbेDों को अपने भीतर समािहत करते \ए आगे बढ़ता है। शोध का !ाथिमक उbेD &ामीण अंचल म% Jाg दमन, ऋण के जाल और सामािजक धािम-क मया-दा के दबाव से उपजे मनोवैAािनक उhेरकों का िव.ेषण करना है, जो

िकसान के अवचेतन मन म% कुं ठा और हीनभावना पैदा कर युवा पीढ़ी को गाँव छोड़ने के िलए मानिसक +प से िववश करते हa। इसके साथ ही यह अ2यन आ0िनभ-रता के बदलते मानिसक !ितमानों का मू[ा◌ंकन करता है, जहाँ गाँव की पारंप रक आ0िनभ-रता के शहर की आधुिनक, पूंजीवादी और JKLवादी आ0िनभ-रता म% बदलने की मानिसक !िEया को समझा जाएगा। इसी Eम म% यह िव.ेिषत िकया जाएगा िक अपनी मया-दा की रi◌ा करने का होरी का !यास िकस !कार एक आ0घाती आ0िनभ-रता के ।म का
+प ले लेता है, जो उसके िवनाश का कारण बनता है। इस शोध का एक अ8 मु9 उb◌ेD &◌ामीण बनाम शहरी शोषण के मनोिवA◌ान का तुलना0क अ2यन करना है, िजसके तहत गाँव के !Xi, धािम-क व जाितगत शोषण तथा शहर के परोi, औ ◌ोिगक शोषण के बीच के अंतर को पा?◌ों की मानिसक K थित और आ0 अलगाव के संदभ- म% रेखांिकत िकया जाएगा। इसी प र!◌ेj म% पहचान के संकट के ढांचे का उपयोग करते \ए िव थािपत पा?◌ों के मन म% उ]I होने वाले अKQRगत एकाकीपन और भूिमका के ।म की पड़ताल की जाएगी। सािहKXक J◌ा9◌ा को संतुिलत बनाने के िलए यह शोध पुmष !वासन के कारण पीछे छू टी मिहलाओं के भीतर उ]I होने वाले परोi मानिसक संताप और भावना0क तनाव का िव.ेषण करता है। अंततः , यह संपूण- िवमश- गोदान के यथाथ-वाद की समकालीन !◌ासंिगकता को थािपत करता है िक कै से उप8◌ास म% विण-त िव थापन के मनोवैA◌ािनक !ितमान वत-मान महानगरों म% रह रहे !वासी मजदूरों के अवसाद और कृ षक संकट को समझने म% सiम हa।

!Q◌ुत शोध प? म% !वासन के कारण मानवीय चेतना, आ0िनभ-रता और शोषण के बदलते !ितमानों का िव.ेषण करने के िलए एक ि?-आयामी सैG◌ा◌ंितक ढांचे का उपयोग िकया गया है। यह ढांचा अB◌ाहम मैC◌ो के आवDकता पदानुEम िसG◌ा◌ंत, ए रक ए र:न के मनोसामािजक िवकास के अंतग-त पहचान के संकट के वैचा रक ढांचे और उdर-औपिनवेिशक मनोिवA◌ान के िसG◌ा◌ंतों के अंतसoबंधों पर आधा रत है। सािहKXक आलोचना म% यह एकीकृ त उपागम िव थापन की !िEया को मा? एक भौगोिलक घटना न मानकर उसे एक अX◌ंत जिटल आंत रक और मानिसक संकट के +प म% J◌ा9◌ाियत करने का माग- !शQ करता है। इस ढांचे का !थम Q◌ंभ अB◌ाहम मैC◌ो का आवDकता पदानुEम िसG◌ा◌ंत है, जो थािपत करता है िक मानवीय !◌ेरणाएँ एक Eिमक Jव था म% काम करती हa, जहाँ बुिनयादी शारी रक और सुरi◌ा संबंधी आवDकताओं की पूित- के बाद ही आ0-सp◌ान की िदशा म% कदम बढ़ाया जा सकता है। गोदान के &◌ामीण प रवेश म% िनरंतर बुिनयादी सुरi◌ा और शारी रक अ KQR के संकट से जूझ रहे होरी जैसे पारंप रक कृ षक पर जब इसे लागू िकया जाता है, तो यह q< होता है िक अपनी जमीन से िचपके रहने का उसका !यास वाQव म% उr QR की आ0िनभ-रता नहीं, बKV एक हताश मानिसक रi◌ा तं? है। जब बुिनयादी ज+रत% ही असुरिiत हों, तो मया-दा की रi◌ा का यह !यास एक आ0घाती आ0िनभ-रता के ।म म% बदल जाता है, जो अंततः उसके मानिसक व शारी रक
िवनाश का कारण बनता है। इस ढांचे का दूसरा !मुख वैचा रक आधार ए रक ए र:न का मनोसामािजक िवकास िसG◌ा◌ंत है, जो सामािजक प रवेश के !भाव और उसके फल*+प उ]I होने वाले पहचान के संकट का िव.ेषण करता है। उप8◌ास म% गोबर का गाँव से शहर की ओर पलायन ए र:न के इसी पहचान के संकट और भूिमका के ।म के िसG◌ा◌ंत को च रताथ- करता है। गाँव की सामंती Jव था म% जहाँ गोबर का * एक सामूिहक पहचान से बंधा \आ था, वहीं शहर के औ ◌ोिगक प रवशे म% कदम रखते ही वह पहचान पूरी तरह िवखंिडत हो जाती है। शहर की पूंजीवादी Jव था गोबर को एक JKLवादी * तो !दान करती है, िकं तु उसके बदले म% उसे आ0-अलगाव के गहरे दलदल म% धकेल देती है।

इस िवमश- को पूण-ता !दान करने के िलए इसम% उdर-औपिनवेिशक मनोिवA◌ान का समावेश िकया गया है, जो औपिनवेिशक दमन के अधीन रहने वाले समाजों के आंत रक आघात और मानिसक दासता का अ2यन करता है। यह िसG◌ा◌ंत q< करता है िक दीघ-कािलक आिथ-क शोषण िकस !कार शोिषत वग- के अवचेतन म% एक सीखी \ई लाचारी को थायी +प दे देता है। गोदान के संदभ- म%, गाँव की महाजनी सsता होरी के मानस का इस हद तक दमन कर देती है िक वह अपने शोषण को ही अपनी िनयित मानने लगता है, जबिक शहर का यांि?क माहौल उसके भीतर एक नए !कार के आ0-अलगाव को जt देता है।

!ेमचंद कृ त गोदान म% विण-त &ामीण और शहरी िव थापन के अंतग-त आ0िनभ-रता तथा शोषण के बदलते मनोवैAािनक !ितमानों की पड़ताल करने के िलए एक JवK थत गुणा0क और िव.ेषणा0क शोध पGित का अवलंबन िकया गया है। सािहKXक शोध की !कृ ित को 2ान म% रखते \ए यह अ2यन सांK9कीय या सं9ा0क आंकड़ों के थान पर पूरी तरह से पाH िव.ेषण और आलोचना0क Jा9ा पर आधा रत है। इस शोध के !ाथिमक uोत के +प म% गोदान के मूल पाH का गहन अनुशीलन िकया गया है, िजसके अंतग-त उप8ास के !मुख पा?ों के अंतसoबंधों, उनके संवादों, आंत रक एकालापों तथा िविश< सामािजक आिथ-क प रK थितयों म% उनकी मानिसक !िितEयाओं को िव.ेषण की मु9 साम&ी बनाया गया है। आंकड़ों के एक?ीकरण और पाठ के चयन की !िEया मु9 +प से उन !संगों पर क% िvत है जहाँ &ामीण समाज का महाजनी दमन और लखनऊ जैसे

महानगरीय प रवेश का यांि?क वातावरण पा?ों के मानस को !भािवत करता है।

शोध के Jावहा रक संचालन के िलए चयिनत सािहKXक साम&ी को अBाहम मैCो के आवDकता पदानुEम िसGांत और ए रक ए र:न के मनोसामािजक िवकास िसGांत के थािपत िनxषy के आलोक म% परखा गया है। िव.ेषण की इस !िEया म% Jा9ा0क पGित का उपयोग करते \ए यह देखा गया है िक कै से भौितक प रवेश का प रवत-न आंत रक मानिसक संरचना म% बदलाव लाता है। शोध की +परेखा को इस !कार अिभकKzत िकया गया है िक वह थािपत सामािजक और मा:-वादी आलोचनाओं से आगे बढ़कर िवशुG मनोवैAािनक कोणों से गोदान का पुनमू-[ांकन कर सके। इसके तहत होरी के Jवहार म% िदखने वाली +िढ़वािदता को मैCो के सुरiा संबंधी आवDकताओं के अभाव से जोड़कर देखा गया है, जबिक गोबर के िवvोही *भाव और भटकाव को ए र:न के पहचान के संकट के िसGांत के मा2म से Jा9ाियत िकया गया है।

इस शोध की काय-!णाली म% लaिगक संवेदनशीलता और समकालीन Jावहा रक !ासंिगकता के तRों को भी समािहत िकया गया है। इसके अंतग-त उप8ास के Zी पा?ों के मानिसक अनुकू लन और उनके आंत रक संघषy का पाH आधा रत मू[ांकन िकया गया है तािक !वासन िवमश- का एक संतुिलत पi सामने आ सके। साथ ही यह शोध !णाली केवल एक ऐितहािसक उप8ास के िव.ेषण तक सीिमत न रहकर वत-मान युग के कृ षक संकट और समकालीन भारतीय महानगरों के !वासी मजदूरों की मानिसक K थित के साथ गोदान के यथाथ-वाद का एक तुलना0क और !ासंिगक सेतु िनिम-त करती है।

गोदान के मूल पाठ का सू{ मनोवैAािनक अ|ेषण करने पर &ामीण अंचल से शहरी िव थापन की िजटल मानिसक परतों का रह}ोद्घाटन होता है। पलायन के मनोवैAािनक उhेरकों के प र!ेj म% यिद गोबर के मानस का िव.ेषण िकया जाए, तो q< होता है िक उसका लखनऊ पलायन करना मा? एक आिथ-क िनण-य नहीं था, बKV वह सामंती उ]ीड़न से उपजे गहरे मानिसक अवसाद और सबचेतन कुं ठा से मुKL का एक !यास था। पु ैनी कज- का बोझ, &ा Jव था के कण-धारों Tारा िकया जाने वाला िनरंतर साव-जिनक अपमान और Jव थागत !ताड़ना ने गोबर के भीतर सीखी \ई लाचारी के िवmG एक ती आEोश को जt िदया। यह मानिसक संताप अंततः एक पलायनवादी रiा तं? का +प ले लेता है, जहाँ !वासन भौगोिलक िव थापन से अिधक एक मानिसक िनकास का माग- बन जाता है। इसके िवपरीत, होरी का च र? आ0िनभ-रता के एक अXंत दुः खद और आ0घाती lम को च रताथ- करता है। अBाहम मैCो के आवDकता पदानुEम के आलोक म%, होरी जीवन भर बुिनयादी शारी रक आवDकताओं और सुरiा के घोर अभाव से जूझता रहता है। इसके बावजूद, अपनी जमीन और सामािजक मया-दा को बचाए रखने की उसकी िजद िकसी उr Qर की आ0िनभ-रता का !तीक नहीं है, बKV वह एक हताश और अचेतन मानिसक सुरiा तं? है। जब अKQR की !ाथिमक ज+रत% ही खतरे म% हों, तब मया-दा की रiा की यह अंधी ललक एक ऐसे मानिसक छलावे म% बदल जाती है जो होरी को अपने वाQिवक शोषकों को पहचानने से रोकती है और अंततः उसे मानिसक व शारी रक िवनाश की ओर धकेल देती है। िव थापन की यह !िEया &ामीण नैितक भय और शहरी अलगाव के अंतसoबंधों को भी !खरता से उजागर करती है। गाँव जहाँ धािम-क पाखंड और सामािजक िनयं?ण के !Xi नैितक डर Tारा पा?ों के भीतर एक थायी अपराध बोध पैदा करता है, वहीं लखनऊ जैसा शहरी प रवेश अपनी अXिधक यांि?कता और पूंजीवादी E्र रता के मा2म से JKL का परोi शोषण करता है। ए रक ए र:न के मनोसामािजक िसGांत के अनुसार, जब गोबर गाँव की सामूिहक चेतना और अपनी सामािजक जड़ों से पूरी तरह कटकर शहरी औ ोिगक म Jव था म% !वेश करता है, तो उसके भीतर पहचान का एक गंभीर संकट उ]| होता है। शहर उसे एक *तं? और

JKLवादी अK ता तो देता है, लेिकन इस !िEया म% वह अपनी सामूिहक पहचान और आंत रक शांित खो बैठता है, िजसके
प रणाम*+प वह एक गहरे अKQRगत एकाकीपन और मानिसक िवखंडन का िशकार हो जाता है। !वासन का यह आघात केवल पुmषों तक सीिमत नहीं है, बKV पीछे छू टे Zी समुदाय का मनोिवAान भी अ Xिधक संताप और तनाव से गुजरता है। पुmष पा?ों के िव थापन के बाद गाँव के सामंती समाज का सीधा आEोश और लांछन धिनया तथा झुिनया जैसी मिहलाओं को झेलना पड़ता है। धिनया जहाँ पा रवा रक िबखरने की िचंता के बीच भावना0क तनाव का सामना करती है, वहीं झुिनया सामािजक बिहxार और असुरiा के परोi मानिसक संताप को सहती है। इन Zी पा?ों का आंत रक अवसाद और उनकी मनोवैAािनक सहनशीलता यह िसG करती है िक !वासन के मानिसक दु रणाम पूरे पा रवा रक ढांचे को भीतर से िवखंिडत कर देते हa।

गोदान के मनोवैAािनक !ितमानों का समकालीन प र!ेj म% मू[ांकन करने पर !ेमचंद के यथाथ-वाद की कालजयी !ासंिगकता अचूक +प से िसG होती है।यह वत-मान समकालीन भारतीय समाज की लंत वाQिवकताओं को समझने का एक अ Xंत संवेदनशील झरोखा है। !ेमचंद Tारा िचि?त होरी का मानिसक अवसाद और उसका चरम िवखंडन आज के समय म% जारी भारतीय कृ षक संकट तथा िकसान आ0हXाओं के पीछे िछपे मानिसक संताप का सीधा पूव-भास कराता है। वत-मान समय म% जब कोई छोटा िकसान लगातार फसल की बबा-दी, सं थागत ऋण के जाल और अपनी सामािजक !ितYा को खोने के डर से िघर जाता है, तो उसके मानस म% ठीक वैसी ही लाचारी और गहरा अवसाद उ]I होता है जैसा होरी ने महसूस िकया था। होरी की दुः खद प रणित यह q< करती है िक िकसान आ0हXाएँ केवल आिथ-क िवफलता का प रणाम नहीं होतीं, बKV वे उस गहरी मनोवैAािनक !ताड़ना और आ0-सpान के िवखंडन की चरम सीमा होती हa जहाँ JKL का अKQRगत रiा तं? पूरी तरह Q हो जाता है। !ेमचंद का यह ;ि<कोण समकालीन नीित िनमा-ताओं को यह चेतावनी देता है िक कृ षक संकट का समाधान केवल आिथ-क पैकेजों म% नहीं, बKV उनके मानिसक *ा और सामािजक सुरiा के संरiण म% िनिहत है। इसी सामानांतर Eम म%, उप8ास के मा2म से उभरने वाला गोबर का महानगरीय अलगाव वत-मान समय के महानगरीय !वासी मजदूरों के अKQRगत संघष-, अवसाद और पहचान के िवखंडन का एक जीवंत मानिसक मानिच? !Qुत करता है। समकालीन भारत के बड़े महानगरों म% आजीिवका की खोज म% आने वाले लाखों अनौपचा रक िमक आज भी उसी यांि?क और ठंडी Jव था का सामना कर रहे हa िजसका अनुभव गोबर ने लखनऊ म% िकया था। गाँव की सामूिहक सामािजक सुरiा और आ0ीय संबंधों से कटकर जब ये िमक अनजाने और संवेदनहीन शहरी प रवेश म% थािपत होते हa, तो उनके भीतर एक गहरा अकेलापन और पहचान का संकट जt लेता है। शहर के पूंजीवादी तं? म% वे केवल म की एक इकाई बनकर रह जाते हa, िजससे उनके मानस म% गहरा आ0-अलगाव पैदा होता है। अपनी जड़ों से दूर होने की यह पीड़ा और शहरी Jव था म% अपनी अK ता को बनाए रखने का यह िनरंतर Tंद अंततः उनके मानिसक *ा को बुिनयादी Qर पर खंिडत कर देता है। इस !कार, !ेमचंद ने गोदान म% िव थापन के िजन अ;D मनोवैAािनक आघातों और आ0िनभ-रता के छलावे को रेखांिकत िकया था, वे समकालीन वै ीकरण और शहरीकरण के दौर म% अिधक !खर और !ासंिगक होकर उभरते हa, जो यह िसG करता है िक गोदान गुज़रे कल का इितहास नहीं, बKV आज की मानवीय ?ासदी का जीवंत मनोवैAािनक दQावेज है।

**िन0ष:** गोदान का यह गहन मनोवैAािनक अनुशील इस िनxष- को अकादिमक धरातल पर पु< करता है िक भौगोिलक िव थापन केवल एक बा' भौितक घटना नहीं है, बKV यह आंत रक मानवीय प र;D को पूरी तरह से पुनग-िठत कर देने वाली एक अ;D !िEया है। शोध के िनxषy का अंितम सं.ेषण यह q< करता है िक गाँव की सामंती िजटलताओं से लखनऊ जैसे महानगरीय पूंजीवाद की ओर होने वाला !वासन मानवीय चेतना के भीतर एक गहरा मानिसक +पांतरण लाता है। !ेमचंद के इस कालजयी आ9ान म% िव थापन की यह या?ा एक ऐसे गहन मनोवैAािनक प रवत-न को रेखांिकत करती है, जहाँ बदलते प रवेश के भारी दबाव के अंतग-त पा?ों के अKQR, उनकी आ0िनभ-रता और उनकी संवेदनशीलता के थािपत !ितमान बुिनयादी Qर पर पुनप- रभािषत होते हa। होरी के मानस म% रचे-बसे आ0िनभ-रता के आ0घाती |म से लेकर शहर म% गोबर Tारा झेले गए पहचान के गंभीर संकट और Zी पा?ों के परोi मानिसक संताप तक, िव थापन की !Xेक परत मानवीय अK ता के िबखरने की गवाही देती है। अंततः , यह शोध यह िसG करता है िक गोदान म% !वासन मानवीय िनयित का

वह मानिसक संEमण है, जहाँ भौगोिलक सीमाओं के बदलने के साथ-साथ मनु के सोचने, जीिवत रहने और शोषण से टकराने का आंत रक संसार भी पूरी तरह बदल जाता है।

**संदभ ,ंथ सूची:**


1. !ेमचंद (2016). गोदान, डायमंड पॉकेट बु:, नई िद ी.
2. मैCो, अBाहम एच. (1954). अिभ!ेरणा और JKLR (मोिटवेशन एं ड पस-नैिलटी), हाप-र एं ड रो, 8ूयॉक- .
3. ए र:न, ए रक एच. (1993). बचपन और समाज (चाइ \ड एं ड सोसाइटी), नॉट-न एं ड कं पनी, 8ूयॉक- .
4. !साद, सदािशव (1986). गोदान उप8ास म% &ाम और नगर जीवन का TंT, महा0ा गांधी काशी िव ापीठ, शोधगंगा.
5. परमार, मनीष के. (2015). गोदान के !मुख पा?ों का मनोवैAािनक अ2यन, सरदार पटेल यूिनविस-टी, शोधगंगा.